United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 3.432 (SJIF); Vol-1,Issue-3(Oct-Dec),2024

आधुनिक हिन्दी उपन्यास और अस्तित्ववाद

डॉ. जी. एन. जगन
जीडीसी,
मल्कज्गिरी, हैदराबाद, तेलंगाना

Article Received:08-10-2024 Article Modified:15-12-2024
Article Accepted:20-12-2024 Article Published:26-12-2024
DOI:10.37854/UIJMR.2024.1.3.151

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों पर पाश्चात्य दर्शना का प्रभाव परिलक्षित होता है। इन दर्शनों में वैज्ञानिक दशन, ईश्वर दर्शन, विकासवादी दर्शन, नैतिकवादी दर्शन, माक्र्सवादी दर्शन पर अस्तित्ववादी दर्शन महत्वपूर्ण हैं।

अस्तित्ववादी दर्शन एक विकसित मानव दर्शन है। यह मानव मूल्यों की यथार्थ व्याख्या करने वाले दर्शनों में अग्रगामों है। मानव के निश्चित यथार्थ भावों के अंतर संघर्ष की यथातथ्य व्याख्यन यह करता है। मानव रहस्यों का उद्घाटन अस्तित्ववादी दर्शन का लक्ष्य है। अतः अस्तित्ववाद को व्यक्ति के अस्तित्व से सम्बन्धिन यथार्थवाद ही मान सकते हैं। अस्तित्ववादी दर्शन यह स्पष्ट करता है कि इस जगत में घटनेवाली हर एक घटना हमारे विचार के अनुकूल नहीं चलती है। कभी-कभी प्रतिकूल परिस्थितियों से भी हमें लड़ना पड़ता है। मौत अनिवार्य है। उसे जीतने की शक्ति किसी में भी नहीं है। जीवन पर्यंत व्यक्ति को कर्म करते ही रहना है। बिना किसी लक्ष्य के जीवन मृतप्राय है। व्यक्ति को सांसारिक जीवन में अपराध, संघर्ष, युद्ध, व्याधि और मृत्यु इत्यादि का अनुभव अनिवार्य रूप से करना पड़ता है। कुछ लोगों के अनुसार अस्तित्ववाद, निराशा, कुठा, निष्क्रियता अभिशाप, मनस्ताप, एकाकीपन, ऊब तथा बेहदापन आदि मानवीय जीवन की विद्रूपताओं को उजागर करने वाला दर्शन है।

ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के कारण मानद एकाकी है। चुनाव और निर्णय करने की स्थिति में वह नितान्त अकेला है। वह न तो ईश्वर का सहारा ले सकता है और न किसी सार्वमौम विधान का। अस्तित्वपरक परिस्थितियों में व्यक्ति को स्वयं अपना मार्ग चुनना पड़ता है। अस्तित्ववादी दर्शन पर ज्याँ पाल सात्रे, काम, कीर्कगार्ड, नीत्शें एवं यास्पर्स आदि पाश्चात्य दार्शनिकों का विशेष प्रभाव है। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, बालशौरि रेड्डी, यशपाल, देवेन्द्र, सत्यार्थ आदि हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यासों पर अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में वैयक्तिक अस्तित्व के सूत्रों का जीवंत यथार्थ उपलब्ध होता है। जैनेन्द्र के नारीपात्रों में पाठक उनकी ग्रंथियों को अपनी परिस्थितियों से निर्मित देखते हैं। 'कल्याणी' उपन्यास के हृस्टन, 'सुनीता' उपन्यास के हरिप्रसन्न आदि के व्यक्तित्व का निदान अस्तित्ववादी विचारधारा के अनुरूप ही हुआ।

हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलचैन्द मोडी में उपन्यासनों में अस्तित्ववाद का प्रभाव परिलोदन होता है ऋतुमक्र' के दादी की विचारधारा में अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है। दादा कहते है कि 'अरभाडे बेलोन तो अस्तित्व बाझ। संत्रन्त है, जो संत्राज उन्हें दिखाई देता है वह उनका मन चित्र और जीवन को एक विशेष कोण से देखने के भाग अपने हुआ अम है। लाचन्द्र जोशी कृत विवेचना अभ्यास से अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है। रखड यह बतलाने का प्रयास करते है कि कभी न कभी अहमत्व की अस्विासाविक मिलती है तो वह चाखला उड़ता है, उन बौखलाहट की प्रतिनिक्रिया के फलस्वरूप वह आत्मावलोकन का योजना में जुट जाता है। अज्ञेय कृत 'शेखर एक जीवन' उपन्यास के नायक शेखर के जीवन

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 3.432 (SJIF); Vol-1,Issue-3(Oct-Dec),2024

दर्शन में अस्तित्ववादी जीवन दर्शन की झलक दिखाई देती है। शेखर अपने चिन्तन द्वारा निरर्थकता की प्रतिक्रिया का विश्लेषण स्वयं करता है 'नदी के द्वीप'। मनाव माध्यम से अज्ञेय जी ने इसी का अनुसंघान किया है। ''मानझोय जीवन की निरर्थकता का प्रवाह क्रम है और वह जीवन का प्रत्येक कार्यक्रम के अंत में निहित बोध है।'' 'अपने-अपने अजनबा उपन्यास में अज्ञेय ने मृत्यु की अनिवार्यता के बोध को याद करनेवाली चिंतन प्रणाली को प्रस्तुत किया है। मृत्यु को एक मात्र सच्चाई मानती है। उसकी धारणा है कि हम सबका मरना है। सेत्मा यह स्वीकार करती है कि कुछ भी किसी के बस का नहीं जीना ही जीर्ण होना है।'' सेत्मा के चिंतन में मृत्यु संत्रास की जो भावना निहित है उसे अस्तित्व वाद पूर्ण रूप से स्वीकार करता है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने 'नरमेध' उपन्यास में कहा है कि मृत्यु एक दुःखद घटना है। यह भी मैं मानता हूँ। फिर भी मेग यह निश्चित मत है कि जीवन को जैसे रात और दिन प्रगति देते हैं वैसे ही मृत्यु और जीवन दोनों ही जीवन को प्रगति देते हैं। दिन भर का थका माँदा पुरूष जिस प्रकार रात्री में सुखद कोमल शय्या पर आराम से पैर फैलाकर सोने में सुख पाता हैं उस प्रकार जीवन जब संघर्ष और थकान के क्लांति से चूर होकर मृत्यु की शांत ढ़ाई सेज पर सोता है, तब वह चिर विश्राम का सुख पाता है। उस विश्राम के बाद अगमन है या नहीं यह में नहीं कह सकता। परंतु जय कि मृत्यु निद्रा है। तब हाँ अमृष्ट नहीं जगरण है। जहाँ जागरण है, वहाँ निद्रा है। जसे जागरण में व्यक्त आ रहा रल्पाह-ताजगी और प्रतिक्रियाएँ जीवन में ले रहा है। प्रकार आवन का गतिमय बनाता है।

बालशोरि रड्डी कृत 'भग्र सीमाएँ' उपन्यास का राजेन्द्र के चितन में अस्तित्ववादी दर्शन की झलक पायी जाती है, जीवन के समार्थ नरक ना नहीं है ? पात्र विश्वरूपी रंगमंच पर प्रवेश कर अपना अठा करते हैं। जीवन 'कृत्रिम नहीं यथार्थ है। इसी नए आकर्षक नहीं है। जहाँ कल्पना होती है वहाँ रमणीयता या जाती है। जीवन यथार्थता में रमणीयता के दर्शन के लिए सहृदयता पूर्ण नेत्र चाहिए। व्यक्ति स्वभावत बुरा नहीं होता हर कोई अपनी सीमाओं में आबद्ध है। कोई बुरे रूप में समाज के सामने आना नहीं चाहता। सहज ही वह अपने हृदयों के भावों का प्रदर्शन करता है। समाज उनको बुरे भले रूप में स्वीकार करता है अथवा उनकी व्याख्या करता है।

सामाजिक और पारिवारिक बंधनों के कारण व्यक्ति की स्वतंत्रता पर दबाव पड़ता है। यह सात्रे का अस्तित्ववादी सिद्धांत है। इसकी झलक 'भग्र सीमाएँ' उपन्यास में दिखाई देती है। आनंद अपनी बहिन माला को एक पत्र लिखता है उसमें वह यह सूचना देता है कि प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से स्वतंत्र होते हुए भी पारिवारिक बंधनों में जकड़ा रहता है।

'दिव्या' उपन्यास के पृथुसेन की बातों में भी अस्तित्ववादी चिंतन का समर्थन परिलक्षित होता है। मैं मृत्यु से भय नहीं मानता मृत्यु क्या है ? अस्तित्व का अंत जिस का अस्तित्व नहीं जिन का अनुभव नहीं वह भय भी नहीं कर सकता। भय है जीवित होकर पीड़ा और पराभव से तुम्हें अंक में लेकर समान हो जाकर अपनी इच्छा अपर्ण रह जायेगी ? फिर उस में भय क्या वह अस्तित्व का अत सुखट आते है परंतु युद्ध में पराड होकर उसका हक तिलमिलाकर मरन की कलान में सरार्थकता अधिकार आर समथ्य निराशा, कुण्डा, निष्क्रियता, अभिशाप, मनस्ताप, एकार्कम्पन ऊब तथा बह्दा पन आदि मानवीय जीवन का विद्रूप पहलुओं का उजागर करने वाला दर्शन अस्तित्ववादी दर्शन है। दवेन्द्र सत्याथी कृत 'ब्रह्म पुत्र' उपन्यास का नीलमणी जीवन की एक यात्रा मानता है। जो कि विविध कष्टों से परिपूर्ण है। उसका कथन है कि ''हर प्रकार की कठिनाई और दर्गमता के विरूद्ध संघर्ष का नाम ही जीवन है।''

व्यक्ति के अस्तित्व को बनाये रखने वाली एक प्रभावशाली भावना प्रेम है। जिसके कारण सूखा जीवन

United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 3.432 (SJIF); Vol-1,Issue-3(Oct-Dec),2024

पुष्पित एवं पल्लवित होता है। प्रेम की महान शक्ति व्यक्ति को उन्नत आदर्शों की ओर झुकाती है। प्रेम के अभाव में जीवन निस्सार एवं दुर्भर बन जाता है। शारीरिक रचना प्रेम के लिये प्रथम चरण है। कुरूप व्यक्तियों की अपेक्षा सुंदर प्रकृतिवाले जल्दी ही अन्य जनों के प्रेम को प्राप्त करते हैं। राजेन्द्र यादव कृत 'अनदेखे अनजाने पुल' एक कुरूप नारी की व्यथा भरी कहानी है। उपन्यास की नायिका 'निन्नी' किसी की माँ या किसी की प्रेयसी न बन पायी। निन्नी अपने शारीरिक सौन्दर्य को बढ़ाने के अनेक यत्न करती है। इसका कारण अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये और अपने जीवन का उद्धार करने वाले किसी व्यक्ति के प्रेम को प्राप्त करने की उसकी इच्छा मात्र ही है।

उपयुक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अस्तित्ववादी दर्शन अतिशय आशावादी दर्शन है। अस्तित्ववाद के अनुसार मनुष्य स्वतंत्र है। अपने मार्ग का निर्धारक है। मूल्यों का स्रष्टा है। अस्तित्ववादी दर्शन ने हिन्दी के कई साहित्यकारों जैसे - जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, आ. चतुरसेन शास्त्री बालशौरी रेड्डी, यशपाल, देवेन्द्र सत्यार्थी एवं राजेन्द्र यादव आदि को कुछ हद तक प्रभावित किया है। इन उपन्यासकारों के कतिपय पात्रों पर इस विचार दर्शन का प्रभाव है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि अस्तित्व वाद ने आधुनिक युग चिंतन को जो नयी प्रेरणा दी है उसे हिन्दी के उपन्यासकारों ने ग्रहण करने का सशक्त प्रयास किया है।

संदर्भ सूची:

1. इलाचन्द्र जोशी - 'ऋतु चक्र', पृ. 82
2. 'नरमेध' पृ. 47
3. 'भग्न सीमाएँ'
4. वही पृ. 84
5. 'दिव्या' पृ. 51
6. 'ब्रह्म पुत्र' पृ. 124